उपसंहार

उपसंहार

हिंदी नाटकों की विकास परंपरा तथा रेवती सरन शर्मा के नाटक :

हिन्दी नाटक के उद्भव के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभिन्नता दिखाई देती है। फिर भी हिंदी साहित्य में नाटकों का वास्तविक प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटकों से माना जाता है। भारतेन्दु युग को संस्कृत की -ह्रासोन्मुख नाट्य परंपरा उत्तराधिकार में मिली थी। अत: इस युग में प्राचीन और नवीन नाट्य धारा के समन्वय से नाटकों का सृजन होता रहा। हिन्दी नाटकों को एक सशक्त विधा के रूप में प्रस्तुत करने तथा उसकी साहित्यिक और सामाजिक उपादेयता सिध्द करने में भारतेन्दु और उनके युग के अन्य रचनाकारों की प्रमुख भूमिका रही है। भारतेन्दु ने संस्कृत और पाश्चात्य नाट्य परंपरा का समन्वय करते हुए, रंगमंचीयता की दृष्टि से भी सुधार किये।

जयशंकर प्रसाद के युग में ऐतिहासिक नाटक बड़ी संख्या में लिखे गये। ऐतिहासिक कथावस्तु को लेकर समस्याओं के उद्घाटन का प्रयास इसी युग में हुआ। प्रसाद युग में पौराणिक, सामाजिक, प्रतीकात्मक, सामाजिक समस्याप्रधान नाटकों का सृजन भी किया गया। लेकिन रंगमंचीयता की दृष्टि से कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ। प्रसाद जी के नाटक रंगमंचीय की अपेक्षा साहित्यिक बनकर ही रह गये।

स्वातंत्र्योत्तर कालखण्ड में नाट्य साहित्य का उल्लेखनीय विकास हुआ। प्राय: सभी विधाओं पर नाटक लिखे गये, उनमें भी मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्तियों की प्रधानता रही। समस्या प्रधान नाटकों की उत्पत्ति आधुनिक काल की देन है। आज का हिन्दी नाट्य साहित्य साहित्यिक दृष्टि से समृध्द है, साथ ही

वह रंगमंच की दृष्टि से प्रगति की ओर बढ रहा है। समय की माँग के अनुरूप आज नाटक साहित्य के अन्य रूपों - एकांकी, गीतिनाट्य, रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक आदि का प्रचलन भी बढ गया है।

साठोत्तरी नाटककारों में रेवती सरन शर्मा का प्रमुख स्थान है। उनके नाटक साहित्य पर आदर्शवादी विचार धारा का प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने सामाजिक विषयों को लेकर अधिक नाटक लिखे हैं। उनके नाटक कथ्य और शिल्प की दृष्टि से सफल रहे है। अभिनेयता उनके नाटकों की विशेषता है। उन्होंने अपने नाटकों में रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से अनेक रंग संकेत दिये हैं, जिससे रंगकर्मियों को अभिनय में सहायता होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कथ्य, शिल्प और रंगमंच की दृष्टि से रेवती सरन शर्मा के नाटक सफल रहे हैं।

आधुनिक काल में सिनेमा के प्रचलन के कारण सामान्य दर्शक नाटकों की अपेक्षा सिनेमा देखना अधिक पसन्द करता है। अब नाटक का दर्शक सिनेमा के थियेटर में जा बैठा है। उस दर्शक को फिर से नाट्य-थियेटर में वापिस लाने के लिए नाट्य साहित्य को जन-जीवन से और भी गहरा सम्बन्ध स्थापित करते हुए, रंगमंच की दृष्टि से विकास करना आवश्यक हो गया है। इस प्रकार नाट्य विधा उज्ज्वल भविष्य के लिए विकास के पथ पर अग्रेसर है।

'चिराग को लौ' नाटक का कथ्य --

रेवती सरन शर्मा ने 'चिराग की लौ' में कई समस्याओं को उजागर किया है। प्रस्तुत नाटक में प्रमुख रूप से भ्रष्टाचार की समस्या का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत नाटक स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश की जीवन्त अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है। आज समाज में स्वार्थ सिध्दि के पीछे भागते लोगों का सिधान्तहीन जीवन देखने को मिलता है। घूसखोरी, कालाबाजारी तथा बेरोजगारी ने देश के आर्थिक ढाँचे को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया है। छोटे से

क्लर्क से लेकर बड़े-बड़े अफसरों तक सारे गैर कानूनी कार्य करके वैभवपूर्ण जीवन के लिए संपत्ति जुटा रहे हैं । आज भ्रष्टाचार की जड़े इतनी गहराई में जा पहुँची है कि उन्हें उखाड़ फेंकना मुश्किल हो गया है । मिस्टर मेहता इन्कमटैक्स अफसर है, जिसने भ्रष्टाचार से लाखों रूपयें कमाये है । किशोर के वक्तव्य से यह बात स्पष्ट होती है कि जो कुछ भी उसके पास है रिश्वत देनेवालों ने लाकर दिया है । वह महकमें का सबसे बदनाम अफसर है । पहले हेडक्लर्क था , जब कोई बुरा अफसर आ जाता, इसकी चाँदी हो जाती । खुद लेता हिस्सा अफसर को देता । अब खुद खाता है, खुद हजम करता है । आज शायद ही कोई ऐसा सरकारी या गैर सरकारी कार्यालय अथवा विभाग होगा, जिसमें घूससोरी न चलती हो । सामाजिक क्षेत्र में परिव्याप्त भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति अनेक कुव्यवस्थाएँ,कानून व प्रतिबन्ध लागू किए जाने के बावजूद भी यह दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है । भ्रष्टाचार के विकास का मुख्य कारण है - मनुष्य का पैसे को ही जीवन के समस्त सुखों का मूलाधार मानना । भौतिक सुखों की लालसा ने मनुष्य को रूपये की शक्ति का उपासक बना दिया है । हर व्यक्ति पैसे के पीछे भाग रहा है, उसका केवल एक ही लक्ष्य है - पैसा प्राप्त करना, चाहे जैसा भी मिले । छल,कपट या चोरी से मिले, रिश्वत या अनैतिक साधनों से मिले । पैसे के पीछे इस अंधी दौड़ने आज ढेर सारे दलालों को पैदाईश की है, जिनका एकमात्र उद्देश्य है - अर्थार्जन । ये दलाल आज रिश्वत को बढ़ावा दे रहे हैं। भ्रष्टाचार,रिश्वत,अनैतिकता जैसी समस्याओं ने देश को खोखला बना दिया है । यहाँ तक की जनतन्त्र की आत्मा-अखबार भी पथभ्रष्ट हो रहे हैं। आज अखबार भी गुण्डा-गर्दी करके बने नेता की जय-जयकार कर रहा है ।

आज के भौतिक-युग में आदर्श प्रेम के सिद्धान्त भी झूठे पड़ते नजर आ रहे है । बदलते जीवन मूल्यों के साथ प्रेम का स्वरूप और परिभाषा भी बदल गई है । बुध्दि भावना पर छा गई और स्वार्थ की प्रमुखता बढ़ी । प्रेम में बिखराव और छिछलापन आ गया । इसकी अभिव्यक्ति नाटककार ने तारा के

माध्यम से की है। आदर्शवादी किशोर से अपनी मर्जी से शादी करनेवाली तारा उसकी साधारण स्थिति से ऊबकर उसे कहती है कि मुझे तुम्हारे आदर्श नहीं चाहिए, मुझे रेशम, रूपये और आराम से भरा रंगीला जीवन चाहिए।

प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने भ्रष्टाचार, रिश्वत, अनैतिकता तथा प्रेम के खोखलेपन की समस्याओं को चित्रित किया है और इन समस्याओं के निर्मूलन के लिए समाधान के रूप में आदर्श चरित्र को प्रस्तुत किया है। नाटककार को विश्वास है कि ईमानदारी, नैतिकता तथा आदर्श सिद्धान्त को अख्तियार करके समाज विधायक प्रवृत्तियों को नष्ट किया जा सकता है। किशोर और नसीम के माध्यम से यही संदेश दिया है जो कि 'चिराग की लौ' नाटक का कथ्य बन कर सामने आया है।

'चिराग की लौ' नाटक का शिल्प --

'चिराग की लौ' नाटक की कथावस्तु सरल, स्पष्ट, कौतुहलवर्धक तथा रंगमंचोयता की दृष्टि से परिपूर्ण रूप में विकसित हुई है। इस नाटक की कथावस्तु करूणा और दु:खभावनाओं का प्रक्षोभ और शमन करनेवाली त्रासदी की कथावस्तु है। अत: इस नाटक का कथानक भी त्रासदी के अनुरूप गंभीर एवं विचार-प्रधान है। तारा और किशोर ने प्रेम-विवाह करके खुशियों से भरा परिवार बसाया है लेकिन तारा परिस्थिति सापेक्ष परिवर्तनशील है तो किशोर अति सिद्धान्तवादी होने के कारण अपने तत्वों पर अटल रहता है जिसके कारण दोनों में संघर्ष निर्माण होता है और दोनों सदा के लिए एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। इसप्रकार कथा का अंत शोकमय होता है। यह नाटक नायक प्रधान और आदर्शवादी है। अत: इस नाटक के नायक किशोर का चरित्र अतिसिद्धान्त-वादी बन गया है। इस नाटक में कुल मिलाकर सत्रह पात्र है, जिसमें बारह पुरूष और पाँच स्त्री पात्र हैं। सशक्त चरित्र की दृष्टि से किशोर, तारा, रानी, जयंत

और गिरीश आदि महत्वपूर्ण पात्र हैं। इस नाटक के संवादों में विविधता है। यह नाटक संक्षिप्त संवाद, मन:स्थिति प्रवण संवाद, काव्योचित्त मधुर संवाद, सूचनात्मक खण्डित संवाद, सांकेतिक संवाद, वैज्ञानिक साधन और संवाद शिल्प आदि से युक्त है। नाटककार ने संवाद शिल्प में पात्रों की मन:स्थिति, उनका कार्यव्यापार दिखाने के लिए विशिष्ट विराम चिन्हों, विशिष्ट संकेतों को निर्देशित किया है। प्रस्तुत नाटक की भाषा नाट्यानुकूल है। इसमें भाषा शिल्प की दृष्टि से पात्रानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है, जिससे नाटक में अधिक वास्तविकता आ गयी है। प्रस्तुत नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा-शैली, काव्यमय भाषा-शैली, वर्णनात्मक भाषा शैली, प्रतीकात्मक भाषा-शैली तथा मुहावरे-दार भाषा-शैली का भी प्रयोग किया है। अरबी-फारसी और उर्दू शब्दों का प्रयोग भाषा को अटपटी या बोझिल नहीं बनाता, बल्कि भाषा अधिकाधिक भावभीनि बन गयी है। भाषा में अंग्रेजी शब्दों की भरमार है, साथ ही भाषा कहीं-कहीं सूक्तिमय बन गयी है। युगीन परिवेश का यथार्थ चित्रण करके देश-काल-वातावरण की दृष्टि से नाटक को सफल बनाया है। रहन-सहन तथा भाषा का निर्वाह भी देश-काल के अनुरूप किया है। प्रस्तुत नाटक का शीर्षक प्रतीकात्मक भाषा-शैली में दिया गया है। शीर्षक कौतुहल के साथ पाठक या दर्शक की जिज्ञासावृत्ति को बढाता है। जिसप्रकार चिराग की लौ अन्धेरे को दूर कर उजाला फैलाती है, उसीप्रकार किशोर अपने भीतर की चिराग की लौ रूपी ईमानदारी से अनैतिकता रूपी अन्धेरे को दूर कर समाज के पथ को आलोकित करता है। प्रस्तुत नाटक का शीर्षक आकर्षक, सार्थक, अर्थगर्भित और प्रतीकात्मक है। इस नाटक का उद्देश्य वर्तमानकालीन समाज में व्याप्त अनैतिकता, रिश्वत, भ्रष्टाचार जैसी समाज विघातक प्रवृत्तियों के चित्रण के साथ प्रेम के खोखले आदर्शोंपर प्रहार करना ही है। सामाजिक कुप्रवृत्तियों के उच्चाटन के लिए ईमानदारी और आदर्शपूर्ण आचरण का संदेश देना भी नाटककार का उद्देश्य

रहा है। इसप्रकार रेवती सरन शर्मा की 'चिराग की लौ' नाट्यकृति शिल्प की दृष्टि से एक अनन्य साधारण, अनुपम और सशक्त कृति साबित होती है।

'चिराग की लौ' नाटक की मंचीयता --

'चिराग की लौ' रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से एक सफल नाट्य रचना है। इस नाटक का सृजन रंगमंच पर खेलने के लिए ही किया गया है। अत: नाटककार ने इस नाट्य रचना का सृजन करते समय रंगमंच और अभिनय सम्बन्धि पर्याप्त रंग-निर्देश दिये है। आंगिक, वाचिक, अभिनय के साथ-साथ सात्विक अभिनय के भी अनेक अवसर प्रदान किये हैं। नाटककार ने पात्रों के भावों और मन:स्थितियों को गहराई से व्यंजित किया है, जिससे रंगकर्मियों को अपनी भूमिकाएँ अदा करने में सहायता मिलती है। रूपसज्जा मंचपर एक वातावरण तैयार करती है। रूपसज्जा विधायक आवश्यक रंगसंकेतों के साथ दृश्य के अनुरूप तथा आर्थिक स्तर के अनुरूप परिवर्तीत रूपसज्जा विधायक भी सूक्ष्म संकेत या निर्देश दिये हैं। इस नाटक के मंचन के लिए दो प्रकार की दृश्यसज्जा आवश्यक है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रथम प्रकार की दृश्य सज्जा में थोडे परिवर्तन से दूसरे प्रकार की दृश्य-सज्जा की जा सकती है। सरल दृश्य-सज्जा इसकी विशेषता है। प्रकाश योजना का प्रयोग अंक तथा दृश्य विभाजन के साथ वातावरण निर्मिति के लिए किया है। प्रकाश विधायक प्रयोग अत्यंत कम है। ऐसा सहज भी है क्योंकि १९६० ई.के आस-पास प्रकाश का मंच पर तकनीकी उपयोग इतना विकसित नहींहो पाया था जैसा आज है। ध्वनि एवं संगीत का शैली के अनुरूप प्रयोग किया गया है। ध्वनि योजना में वैज्ञानिक उपकरणों का भी प्रयोग किया है। प्रसंग या घटना के अनुरूप संगीत का प्रत्यक्ष आयोजन मंच पर किया है। पार्श्व - संगीत के बारे में कोई संकेत नहीं दिये हैं। प्रस्तुत नाटक दर्शकीय संवेदना को

झकझोर देनेवाला तथा दर्शक को प्रभावित करनेवाला है। 'चिराग की लौ' नाटक का प्रथम प्रयोग दिल्ली के 'कला साधना मंदिर में २१ मार्च १९६१ को किया। अत: रेवती सरन शर्मा का 'चिराग की लौ' नाटक अभिनय और रंगमंचीयता की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ठ और सफल है।

अध्ययन की नई दिशाएँ -- शर्माजी के नाट्य-साहित्य पर निम्नलिखीत विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है -

(१) रेवती सरन शर्मा के नाटकों का कथ्यगत अनुशीलन।

(२) रेवती सरन शर्मा के नाटकों में सामाजिक चेतना।

(३) रेवती सरन शर्मा के नाटकों की मंचीयता।

(४) रेवती सरन शर्मा के नाटकों में प्रतिबिम्बित समकालीन समस्याएँ।

अनुसंधान की उपलब्धि -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की उपलब्धियाँ हैं --

(१) रेवती सरन शर्मा के नाटक मूल्यों के संवर्धन में सहयोग करते हैं।

(२) रेवती सरन शर्मा के नाटक सुधारवाद और नैतिकता को बढ़ावा देते हैं।

(३) रेवती सरनशर्मा का 'चिराग की लौ' नाटक पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक अपने नैतिक पतन से ऊपर उठने के सारे उपाय पा सकता है।

(४) विवेच्य विषय के अध्ययन की और एक महत्वपूर्ण उपलब्धि - रिश्वतखोरी का विरोध है। विवेच्य नाटक को पढ़नेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक अपने जीवन में रिश्वत लेने की भूल कभी नही करेगा। बल्कि वह हरदम रिश्वत के विरोध में खड़ा रहकर सामाजिक उत्थान में मददगार बनेगा।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ-सूची

शर्मा रेवती सरन	चिराग की लौ	नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९५९ ।

सहायक ग्रंथ-सूची

	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और संस्करण
१	डॉ.ओझा दशरथ	हिन्दी नाटक:उद्भव और विकास	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६१ ।
२	डॉ.बापट विजय	प्रसादोत्तर नाट्य साहित्य	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाळ प्रथम संस्करण, १९७१ ।
३	सम्पा.बोरा राजमल, शर्मा नारायण	हिन्दी नाटक और रंगमंच	पंचशील, जयपुर, प्रथम संस्करण, १९८८ ।
४	डॉ.भाटिया सुभाष	लक्ष्मीनारायण लाल का रंगदर्शन	शांती , रोहतक, प्रथम संस्करण, १९९० ।
५	डॉ.चातक गोविंद	रंगमंच : कला और दृष्टि	तक्षीला, दिल्ली, प्रथम , १९७६ ।
६	डॉ.दूबे चंदूलाल	हिन्दी रंगमंच का इतिहास	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, १९७४ ।

	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और संस्करण
७	डॉ. गुप्त सोमनाथ	हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास	हिन्दी भवन, इलाहाबाद, प्रथम १९५८ ।
८	डॉ. गौतम वीणा और डॉ. गौतम सुरेश	नटशिल्पी डॉ. शंकर शेष	शारदा, नई दिल्ली, प्रथम १९८६ ।
९	डॉ. कुमार रीता	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में	विभु, इलाहाबाद प्रथम १९८० ।
१०	डॉ. लाल लक्ष्मीनारायण	आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच	साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद प्रथम १९७३ ।
११	डॉ. मलिक शांति	हिन्दी नाटकों की शिल्प-विधि का विकास	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम १९७१ ।
१२	सम्पा. माळी शिवराम	नाटक और रंगमंच डॉ. चन्दूलाल दूबे अभिनंदन ग्रंथ	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम १९७६ ।
१३	डॉ. रायन्सारायण	कोणार्क: रंग और संवेदना	कादम्बरी, दिल्ली, प्रथम १९८७ ।
१४	डॉ. शर्मा रामजन्म	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक	लोकभारती, इलाहाबाद, प्रथम १९८६ ।

	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और संस्करण
१५	डॉ. शर्मा श्याम	आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक	अभिनव, दिल्ली, प्रथम १९७४।
१६	डॉ. शुक्ल भगवतीप्रसाद	प्रसाद युगीन हिन्दी नाटक	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प्रथम १९८१।
१७	सिंह गिरीजा	हिन्दी नाटकों की शिल्प-विधि	लोकभारती, इलाहाबाद, प्रथम १९७०।
१८	डॉ. सिंहबच्चन	हिन्दी नाटक	लोकभारती, इलाहाबाद, तृतीय १९७५।
१९	डॉ. टण्डन प्रतापनारायण	हिन्दी उपन्यास कला	'हिन्दी समिति' लखनऊ संस्करण - १९६५।
२०	डॉ. तनेजा सत्येन्द्र	हिन्दी नाटक : पुनर्मूल्यांकन	ग्रन्थम, कानपुर, प्रथम १९७१।
२१	डॉ. वर्मा दिनेशचंद्र	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक समस्याएँ और समाधान	अनुभव, कानपुर प्रथम १९८७।
२२	डॉ. वाजपेयी राधेश्याम	हिन्दी नाट्यकला तथा रेडियो नाटक	अटलांटिक पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली।